

मध्य प्रदेश का 9वाँ टाइगर रज़िर्व

चर्चा में क्यों?

[राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण \(NTCA\)](#) ने शविपुरी ज़िले में [माधव राष्ट्रीय उद्यान को टाइगर रज़िर्व](#) के रूप में मान्यता देने की स्वीकृति प्रदान की है। इस नरिणय के परिणामस्वरूप, माधव मध्य प्रदेश में 9वें बाघ आरक्षित क्षेत्र के रूप में स्थापित होगा।

- समतिने पार्क में एक नर और एक मादा बाघ को छोड़ने की अनुमति भी प्रदान की।

मुख्य बडि

- **प्रस्तावति बाघ अभयारण्य क्षेत्र:**
 - इसका वसितार 1,751 वर्ग कलिमीटर होगा, जसिमें 300 वर्ग कलिमीटर का मुख्य क्षेत्र शामिल होगा।
 - 75 वर्ग कलिमीटर और 1,276 वर्ग कलिमीटर का बफर ज़ोन होगा।
 - सफल प्रजनन कार्यक्रम के बाद, [माधव राष्ट्रीय उद्यान ने सतिंबर 2024 में बाघ शावकों के जन्म के साथ बाघ संरक्षण में एक मील का पत्थर स्थापति कथि।](#)
- **बाघ पुनःप्रवेश का दूसरा चरण:**
 - मध्य प्रदेश वन विभाग पुनः बाघों को लाने के दूसरे चरण की तैयारी कर रहा है, जसिमें [बांधवगढ़, कानहा या संजय-दुबरी राष्ट्रीय उद्यानों](#) से अतिरिक्त बाघों को लाना शामिल है।
- **दीर्घकालिक वसितार योजनाएँ:**
 - माधव टाइगर रज़िर्व [पाँच वर्षों के भीतर 1,600 वर्ग कलिमीटर क्षेत्र में वसितार करने की दीर्घकालिक योजना का हसिसा है।](#)
 - 100 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले बाघ सफारी की भी योजना बनाई गई है, जसिमें 20 करोड़ रुपये का बुनयिादी ढाँचा नविश होगा, जसिसे [पारसिथतिकि पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मलिने की आशा है।](#)
- **संरक्षण और पारसिथतिकि पर्यटन लाभ:**
 - इस पहल का उद्देश्य माधव और [कुनो राष्ट्रीय उद्यानों](#) में वन्यजीव प्रबंधन को सुदृढ़ करना है।
 - इस परयिोजना से [इको-पर्यटन](#) को बढ़ावा मलिने तथा स्थानीय समुदायों को लाभ मलिने तथा क्षेत्रीय विकास में योगदान मलिने की आशा है।
- **मध्य प्रदेश की लंबति अधसिचनारएँ:**
 - [रातापानी वन्यजीव अभयारण्य](#), जसि वर्ष 2008 में बाघ अभयारण्य के रूप में सैद्धांतिक मंजूरी दी गई थी, अभी भी आधिकारिक अधसिचनार का इंतजार कर रहा है।
 - [रपिोर्टों से पता चलता है किरातापानी के नकिट खनन गतिविधियों के कारण राजनीतिक प्रतरीध के कारण इसके औपचारिक नामकरण में देरी हुई है।](#)

माधव राष्ट्रीय उद्यान

- **परचिय:**
 - माधव राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश के शविपुरी ज़िले में स्थति है।
 - यह ऊपरी [वधिय पहाडियों](#) का एक हसिसा है।
 - यह पार्क मुगल बादशाहों और ग्वालियर के महाराजाओं का शकिारगाह था। इसे वर्ष 1959 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मलि।
- **पारसिथतिकि तंत्र:**
 - इसमें [वविधि पारसिथतिकि तंत्र](#) है जसिमें झीलें, शुष्क पर्णपाती और शुष्क कांटेदार वन शामिल हैं।
 - यह वन बाघों, तेंदुओं, नीलगाय, [चकिारा](#) (गज़ेला बेनेट्टी) और [चौसधिा](#) (टेट्रासेरस क्वाड्रकिॉर्नसि) तथा हरिणों ([चीतल](#), सांभर और [बारकगि डयिर](#)) का पर्यावास है।
- **बाघ गलथिारा:**
 - यह पार्क देश के [32 प्रमुख बाघ गलथिारों](#) में से एक के अंतर्गत आता है, जो बाघ संरक्षण योजना के माध्यम से संचालति होते हैं। बाघ संरक्षण योजना [वन्यजीव \(संरक्षण\) अधनियिम, 1972](#) के तहत कारयान्वति की जाती है।

